

डॉ. मार्व विल्सन, भविष्यवक्ता, सत्र 15, होशे, भाग 2

© 2024 मार्व विल्सन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यवक्ताओं पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 15, होशे, भाग 2 है।

ठीक है, मैं आगे बढ़ने के लिए तैयार हूँ। आइए प्रार्थना करें।

हम शुरू करेंगे। हम धर्मग्रंथ पढ़ते हैं, प्रभु, और हमें याद दिलाया जाता है कि लोग सांस लेने की तरह ही स्वाभाविक रूप से प्रार्थना करते थे। हम आपको ईश्वर-मदहोश लोगों के लिए धन्यवाद देते हैं, जिनका हम अध्ययन कर सकते हैं, ऐसे लोग जिनसे आप बार-बार मिलते थे, कभी-कभी कुछ सबसे असाधारण तरीकों से, जिनके बारे में आपकी बातचीत जीवन के हर कदम पर भरी हुई थी।

हमारी मदद करें कि हम अपने विश्वास को कभी भी अलग-अलग हिस्सों में न बाँटें और आध्यात्मिक काम करें। हमें यह एहसास दिलाने में मदद करें कि हम आध्यात्मिक हैं, हम जो कुछ भी करते हैं, जो कुछ भी सोचते हैं और जो कुछ भी करते हैं, उसमें हम आपके प्रति जीवित हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हम सर्वशक्तिमान की ओर से लोगों के प्रति आपकी दया और कृपा के बारे में नए सबक सीखेंगे।

हमें होशे के पाठों को सीखने में मदद करें, जो आपके असीम प्रेम, नई शुरुआत और यहां तक कि पुनर्स्थापना की संभावनाओं के बारे में हैं। उन शास्त्रों के लिए धन्यवाद, जिनका हम गॉर्डन में खुले तौर पर और स्वतंत्र रूप से अध्ययन कर सकते हैं। प्रार्थना करें कि यह स्कूल हमेशा एक ऐसा स्कूल बना रहे जो बाइबिलो-केंद्रित और मसीह-केंद्रित हो।

मैं हमारे प्रभु मसीह के द्वारा यही प्रार्थना करता हूँ। आमीन। मैं हमारे आने वाले पासओवर सेडर पर एक शीट बाँटने जा रहा हूँ।

यह 6 अप्रैल है। यह आपके किसी भी मित्र के लिए खुला है, लेकिन जब आप मुझे अपने भुगतान के लिए एक लिफाफा देते हैं, जिसे मैं ब्रेक से वापस आने के बाद पहली कक्षा के लिए लेने जा रहा हूँ, तो आप नकद भुगतान कर सकते हैं। छात्रों के लिए शुल्क \$12 है, लेकिन मुझे एक परोपकारी व्यक्ति मिल गया है जो इसे कुछ और डॉलर घटाकर \$10 करने को तैयार है।

वयस्कों के लिए 20 डॉलर का शुल्क है, इसलिए इसमें भोजन भी शामिल है। यह इस बात का एक शानदार उदाहरण है कि हम उत्तरी तट पर क्या कर रहे हैं। एक इंजील चर्च और उनकी पूजा टीम को एक साथ लाना, सेडर के लिए संगीत के लिए रब्बी के साथ काम करना।

यह आपको दिखाता है कि ईसाई-यहूदी संबंध क्या कर सकते हैं। पवित्रशास्त्र में एक सामान्य विषय लें: मुक्ति। बाइबिल की किसी घटना का जश्न मनाएँ; सबसे पुराना लगातार मनाया जाने

वाला, और निश्चित रूप से, यहूदी समुदाय के लिए बाइबिल में निहित सबसे महत्वपूर्ण उत्सव, चाहे वह प्रवासी हो या देश में।

मुक्ति, फसह, यहूदियों के घर वापसी, पारिवारिक जीवन, ईश्वर द्वारा किए गए सबसे बड़े चमत्कार को याद करने का अवकाश है। तो, यह बुधवार शाम, 6 अप्रैल को मंदिर शिरत हय्याम में होगा। हम यहाँ से 4:45 बजे निकलेंगे, और संभवतः 9 बजे के आसपास परिसर में वापस आएँगे, मेरा अनुमान है।

क्या आपके पास इस पर कोई सवाल है? आप ब्रेक के बाद पहली या दूसरी क्लास तक इस पर नाम जोड़ या हटा सकते हैं। लेकिन मैं इसे पहली बार लोगों के बीच पहुँचा रहा हूँ। क्या आपके पास इस पर कोई सवाल है? पिछली बार हमने होशे के कुछ मुख्य बिंदुओं का अध्ययन शुरू किया था।

हमने कहा कि होशे उत्तरी राज्य में आमोस का समकालीन था। 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व का पहला भाग, या जैसा कि हमारे यहूदी मित्र इसे ईसा पूर्व कहते हैं, आम युग से पहले। यदि आप कभी कोई ऐसी किताब उठाते हैं जिस पर ईसा पूर्व लिखा हो, तो वह अक्सर किसी यहूदी लेखक द्वारा लिखी गई होती है।

AD का मतलब CE है, जो कि आम युग है। पिछली बार मैं होशे की गोमेर से शादी के बारे में कुछ विचारों के बारे में बात कर रहा था, जो कुछ हद तक समस्याग्रस्त है और कई तरह की व्याख्याओं के लिए खुला है। मैंने जो आखिरी बिंदु बनाया वह अब्राहम जोशुआ हेशेल द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोण था।

अर्थात्, यह विवाह यह दिखाने के लिए था कि परमेश्वर इस्राएल के बारे में कैसा महसूस करता है, और उसे, कई तरीकों से, भावनात्मक रूप से उस गहरे करुण भाव, उस गहरे एहसास को व्यक्त करना था कि वह कितना टूटा हुआ है। और वह अपने लोगों की कितनी परवाह करता है, जो सचमुच दूसरे देवताओं के पीछे वेश्यावृत्ति करने के लिए जाते हैं।

और इसलिए, हेशेल का कहना है कि यह अनुभव मुख्य रूप से पैगंबर के लाभ के लिए था। और जबकि मुझे लगता है कि हम इस बात से सहमत हो सकते हैं कि ईश्वर ने पैगंबरों को अलग रखा और अपनी इच्छा, अपनी गहरी संवेदना और चिंताओं को उनके सामने रखा। लेकिन, हमें हमेशा यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि ईश्वर द्वारा पैगंबर से बात करने का उद्देश्य केवल मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक रूप से ईश्वर की संवेदना को समझना नहीं था, बल्कि पैगंबर रहस्योद्घाटन का माध्यम भी था।

इसलिए, यह नबी को प्रभावित करने से कहीं अधिक था, यह उसके आस-पास के लोगों को प्रभावित करने के लिए था। ईश्वर ने नबी को बदल दिया ताकि नबी बदले में दूसरों में बदलाव ला सके। और इसलिए, यह नबी को ईश्वरीय सहानुभूति, ईश्वरीय करुणा की भावना से परिचित कराने से कहीं अधिक है।

पैगंबर को भी भगवान की तरह ही पीड़ा सहनी पड़ती है। महत्वपूर्ण? हाँ। लेकिन उनकी शादी एक नाटक थी जिसे लोगों को ईश्वरीय सत्य बताने के लिए एक वस्तुनिष्ठ अनुभव के रूप में पेश किया गया था।

धर्मग्रंथ किसी भविष्यवक्ता के साथ समाप्त नहीं होता। या फिर परमेश्वर कैसा महसूस करता है, इसका अनुभव किसी भविष्यवक्ता के साथ समाप्त नहीं होता। यह वास्तव में इन बातों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए है।

एक या दो अन्य त्वरित दृष्टिकोण जिन्हें मैं संक्षेप में बताना चाहूँगा। पहला, होशे से विवाह के बाद गोमेर एक वेश्या बन जाती है। यह एक बहुत ही सामान्य व्याख्या है।

विचार यह है कि परमेश्वर ऐसा कभी नहीं करेगा क्योंकि वह ऐसा परमेश्वर है जो कभी भी खुद को इस तरह की पापपूर्ण स्थिति से प्रभावित नहीं करना चाहेगा। बल्कि, यह पूरी घटना होशे की पत्नी गोमेर के साथ होती है, जब वे विवाहित होते हैं। वह एक दुष्ट महिला या व्यभिचारी महिला नहीं थी।

होशे ने जब उससे विवाह किया था, तब वह पवित्र थी। लेकिन विवाह के बाद वह वेश्यावृत्ति के जीवन में चली गई, ऐसा इस दृष्टिकोण से कहा जाता है। और इसलिए यहाँ 1.2 में जो आदेश दिया गया है, वह यह है कि तुम जाकर वेश्यावृत्ति करनेवाली स्त्री को अपनाओ और वेश्यावृत्ति से बच्चे पैदा करो, वह आदेश वास्तविक शब्दों का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि भविष्यवक्ता को परमेश्वर का आह्वान दर्शाता है।

पीछे मुड़कर देखने पर, होशे अपने जीवन को देखता है और उसे इस तरह से समझता है। जब वह अपने कई वर्षों को देखता है, तो उसे एहसास होता है कि यह बुलावा उसे तब मिला जब उसने अपनी पत्नी को छोड़ दिया, एक ऐसी पत्नी जो बेवफा साबित हुई। तो, पूर्वानुमानित रूप से, यही मामला रहा होगा।

और इसलिए, भविष्यवक्ता के लिए, परमेश्वर, अपने पूर्वज्ञान में, जानता था कि गोमेर के साथ ऐसा होगा। वह इस स्थिति में गिर जाएगी। इसलिए, जैसा कि मैंने कहा, वेश्या की पत्नी को लेना पूर्वानुमानित तरीके से, पूर्वानुमानित तरीके से प्रयोग किया जाता है।

होशे ने देखा कि परमेश्वर के हाथ ने एक ऐसी शादी को जन्म दिया था जो मानवीय दृष्टिकोण से त्रासदी से भरी हुई थी। और जब होशे बाद में अपने जीवन पर नज़र डालता है, जब वह लिखता है, तो वह उस दुखद अनुभव पर विचार करता है। गोमेर का भविष्य निष्ठा में था क्योंकि उसे यह समझ में आ गया था।

हेशेल ने अपनी एक रचना में एक फुटनोट में लिखा है कि यहाँ इस्तेमाल की गई विशेष हिब्रू अभिव्यक्ति का अर्थ वेश्या या वेश्या बनने के लिए नियत व्यक्ति से लिया जा सकता है। संभावित रूप से। तो, यह पाठ को समझने का एक सामान्य तरीका है।

और फिर अंत में, एक और तरीका जिससे कभी-कभी विवाह की व्याख्या की जाती है, उसे हम प्राकृतिक दृष्टिकोण, या शाब्दिक दृष्टिकोण, या अंकित मूल्य दृष्टिकोण कह सकते हैं। इसे वैसे ही पढ़ें जैसा कि यह प्रतीत होता है। और, इसलिए, यह दृष्टिकोण कहेगा कि गोमेर को एक कुख्यात चरित्रहीन महिला के रूप में देखना सबसे उचित लगता है जिसे परमेश्वर ने होशे से विवाह के लिए चुना था।

क्यों? क्योंकि परमेश्वर बहुत ही कठोर या नाटकीय तरीके से संदेश भेजना चाहता था। वह संदेश को बहुत ही स्पष्ट तरीके से भविष्यवक्ता और उसके लोगों तक पहुँचाना चाहता था। और, इसलिए, जब आप बाकी शास्त्रों को देखते हैं, तो आप कह सकते हैं, अच्छा, यशायाह को देखिए।

यशायाह अध्याय 20 में कहा गया है कि वह यरूशलेम की सड़कों पर नंगे और नंगे पांव घूमता था और लोगों के लिए हंसी का पात्र बन गया, जो कि बहुत कठिन काम था। या यिर्मयाह को देखें। परमेश्वर ने यिर्मयाह को विवाह करने से मना किया, जो कि पितृसत्तात्मक दुनिया में बहुत कठिन काम होता, और उसे काफी संदेह का विषय बना दिया, जिसे सहना मुश्किल था।

ऐसे अन्य बिंदु हैं, या ऐसे स्थान हैं, जहाँ हम पवित्रशास्त्र में जा सकते हैं, जहाँ परमेश्वर लोगों से कुछ बहुत ही असामान्य कार्य करने के लिए कह रहा है, ताकि लोगों की सोच में अनुग्रह या न्याय का संदेश अमिट रूप से अंकित हो सके। और यह होशे की स्थिति की भयावहता को दर्शाता है। और, इसलिए, यह दृष्टिकोण एक बार फिर से एक सीधी भाषा की ओर ले जाएगा।

उसने वास्तव में एक वेश्या से विवाह किया। और यह ठीक वैसा ही था जैसा परमेश्वर अपने लोगों को देख रहा था। उनके साथ उनका प्रेम समाप्त हो गया था, और वे एक दूसरे रिश्ते में थे, जो मूर्तिपूजक, कामुक कनानी धर्म था जिसमें पवित्र वेश्यावृत्ति शामिल थी, और इस्राएल बहुत दूर चला गया था।

ठीक है, इन विभिन्न दृष्टिकोणों में बहुत सी बारीकियाँ हैं, जिनकी आलोचना करने के लिए मेरे पास वास्तव में अधिक विस्तार से जाने का समय नहीं है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप कुछ मुख्य तरीकों से अवगत हों, जिनमें विवाह, जो स्वयं समस्याग्रस्त है, को देखा गया है। अब, विवाह को ही देखें, और फिर से, होशे का एक बड़ा दृश्य, एक से तीन तक, जीवनीपरक है। नबी का गोमेर से विवाह, इस असफल विवाह की कहानी, और विवाह का धीरे-धीरे बिगड़ना, जो कि, उनके अपने व्यक्तिगत जीवन का वर्णन करते हुए, जैसा कि आप इन पहले तीन अध्यायों को पढ़ते हैं, आपको एहसास होता है कि यह उनके अपने जीवन से भी बड़ा है।

क्योंकि परमेश्वर वास्तव में इस्राएल की कहानी बता रहा है और भविष्यवक्ता के अपने जीवन में इन बहुत सी बातों के माध्यम से इस्राएल का संकेत दे रहा है, इसलिए शुरुआती अध्याय में तीन बच्चों का उल्लेख किया गया है। और आप 1-2 में देखेंगे कि वह गोमेर के पास जाता है, और वह उसके लिए एक बेटे को जन्म देती है; आप 1-3 में देखेंगे।

और वह बेटा, वास्तव में तीनों बच्चों में से प्रत्येक, उनके नाम प्रतीकात्मक अर्थ रखते हैं। बाइबल में ऐसा हमेशा होता है। आप उसे यीशु कहेंगे, वह अपने लोगों को उनके पाप से बचाएगा।

मसीहा इम्मानुएल होगा, अर्थात् हमारे साथ रहने वाला परमेश्वर। और कम से कम जहाँ तक मत्ती का सवाल है, यह इस बात का एक बहुत ही सशक्त कथन है कि यह एक दिव्य, अलौकिक जन्म के साथ पैदा होगा। पवित्रशास्त्र के नाम अक्सर सबक देते हैं।

अवराम, महान पिता, अब्राहम बन जाता है, जो कई लोगों या लोगों की भीड़ का पिता है। यिज़्ज़ाक, इसहाक, हँसता है, और हँसी कथा के लिए महत्वपूर्ण है, आदि। ठीक है, तीन बच्चे हैं: यिज़्ज़ेल, लो-रुहम्मा, और लो-अमी।

तो फिर, आइए यहाँ कथा पर नज़र डालें। पहला बच्चा उसके द्वारा पैदा हुआ है। कुछ विद्वान इस तथ्य पर बहुत ज़ोर देते हैं कि केवल पहला बच्चा ही वह छोटा शब्द है, जिसका उल्लेख किया गया है।

दो और बच्चे पैदा हुए हैं, लेकिन यह उससे कुछ नहीं कहता। क्या यह छूट जाना महत्वपूर्ण है? जो लोग कहते हैं कि यह महत्वपूर्ण है, उनके लिए इसका मतलब यह हो सकता है कि वह एक वेश्या है, और वे बच्चे किसी और से पैदा हुए होंगे। क्या यह पंक्तियों के बीच बहुत ज़्यादा पढ़ना है? शायद।

लेकिन, यह ज़रूर कहता है कि यिज़्ज़ेल पहला बच्चा है, और यिज़्ज़ेल एक बेटा है। अब, इस शब्द में एक दोहरा व्यंग्य शामिल है: यिज़्ज़ेल। यिज़्ज़ेल का मतलब है भगवान बिखेरता है।

परमेश्वर बोता है या फैलाता है, जैसे बीज बोने वाला मिट्टी पर फेंकता है। इसलिए, इस पहले बच्चे को यिज़्ज़ेल कहा जाता है, अभी थोड़ी देर के लिए, और मैं यिज़्ज़ेल के खून के लिए येहू के घराने को दण्ड दूंगा, और मैं इस्राएल के घराने के राज्य का अन्त कर दूंगा। यह पहला पुत्र, यिज़्ज़ेल, यह दर्शाता है कि इस्राएल के लोगों के निर्वासन में बिखर जाने के बाद, यहीं पर अभिव्यक्ति है, इस्राएल के दस खोए हुए गोत्र, गूगल द बनी मनाशा, मनश्शे के पुत्र, बहुत ही आकर्षक आंदोलनों में से एक, जैसा कि हम बोलते हैं, सैकड़ों यहूदी जो भारत के क्षेत्र में गए, उत्तरी राज्य से बिखरने के बाद धीरे-धीरे अपना रास्ता बनाया, और अब इस्राएल की सरकार के साथ काम कर रहे हैं।

इससे पहले, ओह, शायद सात महीने पहले, मैंने एक इज़राइली को सुना जो सरकार के साथ काम करता है, इन लोगों के साथ काम करता है, वापस आ रहा है। उन्होंने चीन के कई शहरों का भी जिक्र किया, जहाँ, असीरियन साम्राज्य के दूरदराज के इलाकों में बिखराव के कारण, वे पूर्व की ओर बढ़ते रहे; उनमें से कुछ, और उनमें से कई, अब घर वापस आना चाहते हैं। उन्होंने होशे के दिनों से कुछ रीति-रिवाजों को संरक्षित किया है।

लेकिन बहुत अधिक सांस्कृतिक अनुकूलन भी हुआ है, इन अन्य राष्ट्रों के साथ बहुत अधिक अनुकूलन हुआ है जिसमें उन्होंने खुद को पाया है। लेकिन उस बिखराव का वादा किया गया था, और उत्तरी राज्य तब विभाजित हो जाएगा जब शाल्मनेसर वी, सरगोन द्वितीय हमला करने आएंगे, लेकिन उससे भी पहले, 745 ईसा पूर्व में, टिग्लथ-पाइलसर आया और उसने निर्वासन नीति शुरू की, और असीरियन साम्राज्य के दूरदराज के इलाकों से लोगों को ले जाकर उत्तरी

राज्य में बसाया, और यही सामरी समस्या की उत्पत्ति है जिसे आप यीशु के दिनों में याद करते हैं। यहूदी सामरियों से बात नहीं करते।

क्यों? क्योंकि असीरियन साम्राज्य के ये लोग इस क्षेत्र में लाए गए थे जहाँ होशे अभी काम कर रहा है। तो, लोगों के पाप के कारण बिखराव या निर्वासन होगा, लेकिन यह भी कहा गया है कि परमेश्वर उन्हें फिर से उनकी भूमि पर रोपेगा या बोएगा। और इसलिए, निर्वासन के संदर्भ में बिखराव और फिर से उनकी भूमि पर रोपने या बोने का यह दोहरा अर्थ है।

तो, यहाँ प्रारंभिक भाग में परमेश्वर के इस्राएल के घराने से नाराज़ होने की बात कही गई है। अब, कई बार, वह इस्राएल के उत्तरी राज्य के प्रमुख जनजाति एप्रैम का उपयोग करता है। यहाँ वह इस्राएल के घराने के बारे में कहता है, श्लोक 4, और उस दिन मैं यिज़ेल की घाटी में इस्राएल के धनुष को तोड़ दूँगा।

वह 721 की आशंका कर रहा है। वह उत्तरी राज्य के अंतिम पराभव की आशंका कर रहा है। और इस विशेष मामले में परमेश्वर उत्तरी राज्य से क्यों नाराज़ है? वह येहू के घराने का उल्लेख करता है।

बड़े अक्षर में जेहू। जेहू, आपको शायद याद हो। वह वह व्यक्ति है जो अपने रथ को बहुत ही उग्रता से चलाता है।

आप हमेशा उसे दूर से पहचान सकते थे। अगर आप दीवार पर एक संतरी को बिठाकर दूरबीन से क्षितिज की ओर देखते हैं, तो धूल का बादल, यह जेहू है, क्योंकि वह बहुत तेज़ गति से गाड़ी चलाता है। लेकिन जेहू, क्योंकि वह एक भावुक व्यक्ति था जो प्रभु के कारण की रक्षा करना चाहता था, उसने सभी घूंघट उपासकों की हत्या शुरू कर दी।

एक स्तर पर, कोई सोच सकता है, ठीक है, वह होशे पर एहसान कर रहा है। वह होशे द्वारा दिए जा रहे उपदेशों के लिए कुल्हाड़ी चलाने वाला व्यक्ति है। खैर, उसने यह सब बहुत ही स्वेच्छाचारी और खूनी तरीके से किया।

वह एक बड़े पैमाने पर सफ़ाई अभियान पर था। और अगर आप 2 राजा 9 और 2 राजा 10 को देखें, तो मौत का सबसे ज़्यादा सजीव वर्णन 2 राजा 9 में मिलता है, जहाँ येहू ने एक ऐसी महिला को पाया जो होशे के खिलाफ़ बालवाद को बढ़ावा दे रही थी, और यह इज़ेबेल थी, जो टायर के राजा की बेटी थी, जिसकी शादी अहाब से हुई थी। और इसलिए वह अपने आप में उस चीज़ का प्रतिनिधित्व करती है जिसे खत्म किया जाना चाहिए।

और इसलिए महल में काम करने वाले कई लोग उसे नीचे गिरा देते हैं। उसका खून दीवार और घोंड़ों पर फैल जाता है। वे उसे रौंद देते हैं।

लोग खाने-पीने के लिए अंदर जाते हैं और जश्न मनाते हैं कि उसे नीचे उतार दिया गया है। और शास्त्रों में कहा गया है कि जब वे उसे दफनाने गए तो खोपड़ी और पैर और हाथ की हथेलियाँ ही

उसके बचे हुए हिस्से थे। यह आपको बालवाद के बारे में हमारे विचार बताने के लिए सभी विस्तृत विवरण देने का एक तरीका है।

और यह महिला जो इसे आगे बढ़ाने के लिए जुनूनी थी। तो, यह अहाब के घराने का येहू का नरसंहार था। बहुत ही खूनी कृत्य।

2 राजा 10:12 से 14:42 में अहज्याह के राजकुमार भी मारे गए। तो, यिज़्बेल में, यह यिज़्बेल घाटी थी। यिज़्बेल प्राचीन इस्राएल का अन्न भंडार था।

यिज़्बेल, पूरी घाटी को भगवान की बोआई कहा जाता था। अब ग्रीक काल के दौरान, इस शब्द को ग्रीककृत, हेलेनाइज्ड किया गया, इसे एस्ट्रैलोन कहा गया, जो यिज़्बेल के लिए ग्रीक है। भगवान की बोआई घाटी।

तो, यिज़्बेल में, येहू ने इस्राएल के राजा योराम की हत्या कर दी। उसने दक्षिणी राज्य के राजाओं में से एक, राजा अहज्याह की भी हत्या कर दी। इज़्बेल की तो बात ही छोड़िए, जिसका मैंने अभी ज़िक्र किया है।

इसलिए, होशे के लिए, इन सब के अलावा, ये कृत्य भयानक अपराध थे, ताकि उनके अपराध का प्रायश्चित केवल उत्तर के राजवंश के पतन से ही हो सके। यह हमें आज याद दिलाता है कि हमारे अपने समाज में कुछ घृणित चीजें हो रही हैं। लेकिन अब हम बाहर जाकर उजी या मशीन गन या राइफल नहीं लेते और कानून को अपने हाथ में लेकर उन लोगों का नरसंहार या सफाया नहीं करते जो ऐसे काम कर रहे हैं जिनका हम सम्मान नहीं करते।

यह प्रतिशोधी भावना इतनी आसानी से हाथ से निकल जाती है, और हम इसे लैटिन अमेरिका में मुक्ति धर्मशास्त्र में देखते हैं, जबकि पिरामिड के शीर्ष पर अमीर मोटी बिल्लियों को गिराने का दृष्टिकोण जो समाज को खत्म कर रहे हैं और गरीबों की कीमत पर अमीर बन रहे हैं, जब लोग इन लोगों को उत्पीड़कों से अपनी भूमि को मुक्त करने के लिए नीचे लाते हैं, तो अक्सर जंगल की आग फैल जाती है। और विनाश, न केवल बड़ी संपत्ति का, बल्कि जीवन का, किसी चीज के खिलाफ इस तरह के विद्रोह या विद्रोह में हो सकता है। और मुक्ति धर्मशास्त्र के बीच एक वास्तविक तनाव है, अर्थात्, भगवान के पास गरीबों के लिए जुनून है, लेकिन आप उत्पीड़क पर कितना बुरा प्रहार कर सकते हैं, जो गरीबों की तरह, भगवान की छवि में बनाया गया है, और गलत और गलत होने के बावजूद, यहाँ कभी-कभी धार्मिकता का चैंपियन होने के लिए एक अच्छा संतुलन है।

और दुनिया से बुराई को मिटाने के अपने जुनून के चलते आप कितने अन्य लोगों को मार गिराते हैं? वैसे भी, येहू दोषी था, और परमेश्वर ने कहा कि इस्राएल की शक्ति टूट जाएगी। पद 5 में, धनुष को तोड़ने के लिए, उत्तरी राज्य में एक हथियार, धनुष और तीर, धनुर्धर। इसलिए, यहाँ वह एक सैन्य शब्द का उपयोग करके बस यह कहता है कि उत्तरी राज्य की शक्ति समाप्त हो जाएगी, और धनुष को तोड़ने की उसकी नपुंसकता की भविष्यवाणी की गई थी।

इसी आधार पर, परमेश्वर इस्राएल के आस-पास के राष्ट्रों को अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता और जीवन के प्रति सम्मान के मामले में जवाबदेह ठहराता है। अब, इन बातों को आज के समय में उचित ठहराना बहुत मुश्किल है, लेकिन प्राचीन दुनिया में युद्ध जीवन का एक अहम हिस्सा था। हर राष्ट्र के पास युद्ध का देवता था।

और ईश्वर उस दुनिया में इज़राइल से मिलता है, लेकिन युद्ध में, ईश्वर इज़राइल को जवाबदेह बनाता है। यह बस इतना है कि, बाहर जाकर अपनी मर्जी से काम न करें, और अपनी सीमाओं को स्वतंत्रता के साथ बढ़ाएँ। लेकिन हमेशा नियंत्रण और रवैया होता है जिसके साथ और जिस उद्देश्य से ये चीजें की जाती हैं।

वहाँ पर परमेश्वर की नेताओं और लोगों के प्रति जवाबदेही थी, और हर युद्ध पवित्र युद्ध नहीं था। और युद्ध अलग-अलग थे। लेकिन इस विशेष मामले में भी, याद रखें कि बाइबल का इतिहास दक्षिणी राज्य के पक्ष में पूर्वाग्रह के साथ लिखा गया है।

वे अच्छे लोग हैं। वे यरूशलेम में निरंतर चलने वाले दाऊद वंश के लोग हैं। उत्तर के ये लोग अलग हो गए, और इसलिए, लगभग एक रिकॉर्ड की तरह, जब आप उत्तर के राजाओं को पढ़ते हैं, तो फलां-फलां ने इतने सालों तक शासन किया और वही किया जो प्रभु की नज़र में बुरा था।

मेरा मतलब है, उन्हें इसी तरह देखा जाता था। और भले ही उन्होंने कुछ अच्छा किया हो, फिर भी वे बुरे लोग थे। और इसलिए, आपको उस पूर्वाग्रह को समझना होगा जिसके साथ इतिहास लिखा जाता है।

हमें यह सोचना अच्छा लगता है कि गॉर्डन की लाइब्रेरी में मौजूद हर पाठ्यपुस्तक पक्षपात के साथ नहीं लिखी गई है, न ही किसी दृष्टिकोण के साथ, न ही किसी खास दृष्टिकोण के बचाव में किसी को नीचा दिखाने के लिए। जब आप विद्वत्ता पर विचार करते हैं, और विशेष रूप से एक छात्र के रूप में एक पेपर लिखते हैं, तो वास्तविक चुनौतियों में से एक यह है कि क्या आप किसी विषय पर पूरी तरह से खुले दिमाग से शोध कर सकते हैं, सभी पठन को प्रेरणात्मक रूप से कर सकते हैं, सामग्री में उतर सकते हैं, और अपना मन बना सकते हैं कि साक्ष्य आपको किस ओर ले जा रहे हैं, बजाय इसके कि आप समय से पहले लाइब्रेरी में जाकर किताबें चुनें, क्योंकि आपको अपने शोध विषय का उत्तर पहले से ही पता है, और वे किताबें लें जो आपकी थीसिस और उस स्थिति का बचाव करती हैं जिसके लिए आप तर्क करना चाहते हैं, और फिर विनम्रता से अन्य पुस्तकों या अन्य तर्कों को अनदेखा करें जो आपके दृष्टिकोण को इतना अच्छा नहीं बनाते हैं। वस्तुनिष्ठ विद्वत्ता, जैसा कि जॉन ब्राइट कहते हैं, बाइबल को खोलने में भी, पूर्वधारणावादी व्याख्या असंभव है।

हम सभी बाइबल को पिछले अनुभवों और कुछ निश्चित तथ्यों के साथ खोलते हैं। आप इसे एक खाली स्लेट के साथ नहीं कर सकते। हमारे पास अपनी पूर्वधारणाएँ हैं।

और हममें से कुछ लोगों में पूर्वाग्रह भी होते हैं। यदि आप बाइबल से शुरू करते हैं क्योंकि यह केवल एक साहित्यिक कृति है, और चूँकि यह एक मानवीय उत्पाद है, तो इसमें विसंगतियों के साथ त्रुटियाँ होंगी। फिर, यदि आप बाइबल खोलते हैं और उस तरह से अपना काम करते हैं, तो

आप ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचेंगे जो पवित्रशास्त्र को ईश्वर के वचन के रूप में नहीं मानते हैं, और इसलिए उस पर भरोसा किया जाना चाहिए और अंत में, उस पर पूरी तरह से भरोसा किया जाना चाहिए।

इसलिए, यदि आप अपने अध्ययन की शुरुआत करते हैं, तो पवित्रशास्त्र से निपटने में आपका शुरुआती बिंदु यह है कि यह ईश्वर का वचन है, और यह एक प्राथमिकता है जिसे मैं कार्य के लिए लेता हूँ, बजाय इसके कि यह एक गलत मानवीय साहित्यिक दस्तावेज है जो केवल एक दृष्टिकोण से पक्षपाती है। आप अपने शोध में उसी पूर्वधारणा के साथ समाप्त होंगे। इसलिए, मुझे लगता है कि चूंकि चर्च हमेशा धर्मशास्त्र की दो महान पूर्वधारणाओं के साथ काम करता रहा है, और पाठक आलोचना की इस दुनिया में उन पूर्वधारणाओं में से एक, जबकि यह महत्वपूर्ण है और हमें इसे सुनने की आवश्यकता है, वह पूर्वधारणा हर कोई नहीं कर सकता है, और हर किसी का दृष्टिकोण अगले व्यक्ति के दृष्टिकोण जितना ही अच्छा है।

हमें बस एक दूसरे की बात सुनने और साथ मिलकर काम करने की ज़रूरत है। यह बाइबल पढ़ने की कोई पूर्वधारणा नहीं है। पूर्वधारणा यह है कि ईश्वर मौजूद है और उसने खुद को इस दिव्य रूप से प्रकट किए गए पाठ में प्रकट किया है।

तो, आइए हम इसमें कूदें और देखें कि क्या हम पवित्रशास्त्र के व्याकरणिक-ऐतिहासिक अध्ययन के अच्छे साधनों का उपयोग करके परमेश्वर की बात सुन और समझ सकते हैं और उस दृष्टिकोण से काम कर सकते हैं। हमें यह सुनने की ज़रूरत है कि दूसरे लोग क्या कहते हैं, लेकिन दिन के अंत में, यह ज़्यादा महत्वपूर्ण है कि हम लेखक की बात सुनें कि वह क्या कहना चाहता है, बजाय इसके कि लेखक को इसे मेरे नज़रिए से देखने के लिए कहें क्योंकि मैं इसमें यही देखता हूँ। और यह मेरा पूर्वाग्रह है।

ठीक है, बच्चा नंबर एक, गोमेर, बेहर्स, यिज़ेल। बिखरे हुए, लेकिन एक बार फिर, लगाए जाएँगे क्योंकि जब आप इन पहले तीन अध्यायों को पढ़ते हैं, तो आपको पता चलता है कि इन लोगों के लिए बहाली है। यह भगवान के साथ उनके रिश्ते का स्थायी रूप से टूटना नहीं है।

दूसरे बच्चे को लो- रुहामा कहा जाता है। हिब्रू में मूल शब्द 'रम' दया और दयालु चिंता का विचार व्यक्त करता है। इसका मतलब है पेट में कुछ महसूस करना।

नहीं, रेम गर्भ के लिए हिब्रू शब्द है, और इसलिए जब आप इस शब्द को दया नहीं कहते हैं, तो इसका मतलब है कि आप इसे आंत के क्षेत्र में महसूस नहीं करते हैं। और इसलिए, दूसरा बच्चा, बेटी, पैदा होती है, श्लोक 6, और उसका नाम लो रखा गया, जिसका अर्थ है दया नहीं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर अब अपने अस्तित्व के सबसे गहरे हिस्से में, जैसा कि यह था, हिलने वाला नहीं है।

उसने अपने लोगों के प्रति करुणा, दया और अनुग्रह दिखाया था, लेकिन वह इस्राएल के घराने पर दया नहीं करने वाला था। लेकिन वह जल्दी से श्लोक 7 में बदल जाता है और कहता है, मैं कुछ समय के लिए यहूदा के साथ वहाँ रहने जा रहा हूँ। तुम दोनों लोगों को निर्वासित किया जाएगा।

उत्तरी राज्य, असीरिया में निर्वासित। दक्षिणी राज्य, यहूदा, बेबीलोन में निर्वासित। लेकिन मैं यहूदा के साथ इस कड़ी को लंबे समय तक चलने दूँगा, अभी नहीं, जिसका संकेत वह यहाँ दे रहा है।

वह कहता है, फिलहाल, मैं रूहामाह करने जा रहा हूँ, मैं यहूदा के घराने पर दया करने जा रहा हूँ, और जहाँ तुम अशशूर के हमले से नहीं बचोगे, मैं यहूदा को अशशूर के हमले से बचाने जा रहा हूँ। लेकिन मैं दक्षिणी राज्य में एक बड़ी सेना के द्वारा ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ। ध्यान दें कि यहाँ पवित्रशास्त्र क्या कहता है, श्लोक 7। मैं यहूदा, दक्षिण में तुम्हारी बहन राष्ट्र को, उनके परमेश्वर यहोवा के द्वारा बचाने जा रहा हूँ।

मैं इसे धनुष, तलवार, या युद्ध, घोड़ों या घुड़सवारों द्वारा नहीं करने जा रहा हूँ। कई विद्वानों का मानना है कि यह सन्हेरीब का एक संकेत है। याद रखें, 701 में, सन्हेरीब ने पहले ही यहूदा के 46 दीवार वाले शहरों पर कब्ज़ा कर लिया था।

अब वह यरूशलेम की ओर जा रहा है। हिजकिय्याह हमले के लिए तैयार है। यरूशलेम में हिजकिय्याह की वह अद्भुत जल सुरंग, सिलोआम के कुंड से लेकर गीहोन के झरने तक, घाटी में, किद्रोन घाटी में।

इसलिए वह अपने लिए पानी की उचित आपूर्ति सुनिश्चित कर सकता था। वह उस हमले के लिए पूरी तरह से तैयार था, लेकिन पवित्रशास्त्र क्या कहता है? तथाकथित प्रभु के दूत द्वारा असीरियन सेनाओं के 185,000 सैनिकों को रातों-रात उखाड़ फेंकना, 2 राजा 19, इस अनुभव के बारे में बताता है। 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के इतिहासकार हेरोडोटस कहते हैं कि यह एक बुबोनिक प्लेग की तरह था, जो संभवतः चूहों द्वारा असीरियन सैनिकों के शिविर के माध्यम से फैला था, जब वे यरूशलेम शहर को घेर रहे थे।

हम नहीं जानते कि लगभग 200,000 सैनिकों का यह सबसे बड़ा, एक ही रात में, अचानक विनाश कैसे हुआ। ऐसा लगता है कि यहाँ इसी बात का उल्लेख किया गया है, क्योंकि उस समय हिजकिय्याह को बचा लिया गया था। हिजकिय्याह को न केवल सन्हेरीब के अधीन यरूशलेम के विनाश से बचाया गया, बल्कि उसे अपने जीवन को भी अगले 15 वर्षों के लिए बचा लिया गया।

जैसा कि हमारे पास कई समानांतर ग्रंथ हैं, जिनमें यशायाह भी शामिल है, जो इस असामान्य, ईश्वरीय राजा के बारे में बताते हैं। और शायद यह हिजकिय्याह की वजह से था, वह व्यक्ति जिसने मंदिर की पूजा में संगीत को सभी वाद्ययंत्रों के साथ पेश किया। हिजकिय्याह, वह अच्छा आदमी जिसने कहा, अरे, चलो एक फसल मनाते हैं और उत्तर और दक्षिण के बीच इस दरार को भरते हैं।

हम आपको उत्तरी राज्य से यरूशलेम तक आने देंगे। और उसने उस चीज़ को अंजाम दिया, और पिछले इतिहास को ठीक करने की कोशिश करने के लिए काफी प्रतिक्रिया दी। और यह बाद में योशियाह के अधीन किया गया, जिसने बाद में कई राजाओं को हिजकिय्याह के बाद बनाया।

इसलिए, दक्षिणी राज्य 586 तक नहीं गिरेगा। लेकिन परमेश्वर उद्धार लाएगा। अंतिम संतान लो-अमी है, मेरे लोग नहीं।

यह निश्चित रूप से विवाह संबंध के पूर्ण विच्छेद का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन यह केवल एक अस्थायी विच्छेद था, स्थायी नहीं। यह निश्चित रूप से इस तीसरे बच्चे, बेटे के जन्म में सुझाव देता है, जो सिनाई में शुरू हुआ था, मैं तुम्हारा भगवान बनूंगा, तुम मेरे लोग होगे, वाचा सूत्र।

भूल जाओ। तुमने वैसा व्यवहार नहीं किया है। इसलिए, तुम्हें अस्वीकार कर दिया जाएगा।

स्थायी अस्वीकृति नहीं, लेकिन इसका परिणाम निर्वासन होगा, और इसका परिणाम उत्तरी राज्य का एक राजनीतिक इकाई के रूप में विनाश होगा। यह बिखर जाएगा। लेकिन बाद में वाचा संबंध में यह टूटन बहाल हो जाएगी।

अब, अध्याय 1 के अंत में यहाँ पुनर्स्थापना का संकेत दिया गया है। पश्चाताप न करने वाले इस्राएल पर न्याय के बावजूद, वह छोटा सा शब्द, फिर भी, जो श्लोक 10 में आता है, और फिर भी इस्राएल के लोगों की संख्या समुद्र की रेत की तरह होगी। यह प्राच्य अतिशयोक्ति है। दूसरे शब्दों में, उनमें से बहुत सारे लोग होंगे।

ओरिएंटल अतिशयोक्ति। इस्राएल के लोग समुद्र की रेत की तरह होंगे जिन्हें मापा या गिना नहीं जा सकता। और जिस जगह पर उनसे कहा गया था, लो-अमी, तुम मेरी प्रजा नहीं हो, वहाँ उनसे कहा जाएगा, जीवित परमेश्वर के पुत्र।

और यहूदा और इस्राएल के लोग एक साथ इकट्ठे होंगे। अब, वह समय के गलियारे में बहुत आगे देख रहा है। और वे अपने लिए, अलग-अलग राजाओं को नहीं, बल्कि अपने लिए नियुक्त करेंगे, उत्तरी राज्य में एक राजा दक्षिणी राज्य के राजा के साथ ही शासन करेगा।

और इसीलिए जब आप विभाजित राज्य के लिए बाइबल 101 का अध्ययन करते हैं तो यह बहुत ही भ्रामक होता है। क्योंकि आपके पास उत्तर में लगभग 20 राजाओं और दक्षिण में लगभग 20 राजाओं की सूची है। और उनमें से कई एक ही समय में या एक ही समय में शासन कर रहे हैं।

अब वह एक बार फिर राजतंत्र की ओर लौटने की बात कर रहे हैं, जैसे कि कम से कम एक शासक के साथ। और वे अपने लिए एक मुखिया नियुक्त करेंगे। अब वह मसीहाई युग में बहुत आगे की ओर इशारा कर रहे हैं जब इसकी पूर्ण बहाली होने जा रही है।

इसलिए, ये दोनों लोग अपने लिए एक मुखिया नियुक्त करेंगे। यहाँ इस्राएल की वृद्धि का अर्थ यह हो सकता है कि अब्राहम का परिवार और वाचा का परिवार विस्तृत हो गया है क्योंकि हम अब्राहम की संतान हैं। और हमने अब्राहम के विश्वास के माध्यम से अब्राहमिक परिवार की उस परिभाषा को विस्तृत किया है।

और इस तरह, अन्यजातियों को उसी जैतून के पेड़ में कलम लगाया गया। इसलिए, इस्राएल अभी भी वहाँ है, और अन्यजातियों को कलम लगाया गया है, जो परमेश्वर के लोग बन गए हैं। और जैसा कि पौलुस ने रोमियों 9 में इसका उपयोग किया है, संकेत देने और अर्थ देने में अंतर है।

और ऐसा लगता है कि, नए नियम में, पॉल यह संकेत देना चाहता है, यानी, वह एक विस्तारित विचार, एक नवीनीकृत और पुनर्स्थापित लोगों के सिद्धांत को लेना चाहता है, और इसमें अन्यजातियों को शामिल करना चाहता है। मेरा मतलब है, वे लोग थे जो परमेश्वर के लोग नहीं थे। और परमेश्वर अन्यजातियों पर दया करने जा रहा है, और वह आप और मैं हैं।

और हम परमेश्वर के लोगों का हिस्सा बनने में सक्षम हैं। और हमें इस विस्तारित अब्राहमिक परिवार के माध्यम से शामिल किया जाना है। तो, अध्याय 1 में हम जो देखते हैं वह दंड है, यिजेरल।

फिर, पीछे हटना, प्यार नहीं करना। और फिर, अंत में, पूर्ण अलगाव, मेरे लोग नहीं। अब, अध्याय 2 होशे और गोमेर के इस विचार के साथ रहता है।

यह अध्याय पद 2 में होशे की अपनी शादी की स्थिति से शुरू होता है। लेकिन जल्द ही यह इस्राएल राष्ट्र की तस्वीर में बदल जाता है, एक ऐसे विवाह की छवि के नीचे जो गलत हो गया है। बस कुछ मुख्य बिंदु मैं सामने लाना चाहता हूँ। 2.2 में, शब्द एक प्राचीन तलाक के फार्मूले की याद दिलाते हैं।

अपनी माँ से विनती करो, विनती करो, क्योंकि वह मेरी पत्नी नहीं है, और मैं उसका पति नहीं हूँ। पद 3 में, उसे नंगा कर दो। यह व्यभिचार के लिए एक सज़ा थी, और यह असीरिया की नेज़ू पट्टियों में प्रमाणित है।

यहेजकेल 16 में इसका उल्लेख किया गया है। इसके अलावा, व्यभिचार के लिए सिर्फ़ इस तरह की सज़ा नहीं, बल्कि श्लोक 5 में यह भी कहा गया है, मैं अपने प्रेमियों के पीछे जाऊँगी, यही उसने कहा। यह इस्राएल है।

बाल और ये दूसरे देवता, कनानी व्यवस्था में बाल ने अपने उपासकों को क्या दिया? रोटी, पानी, ऊन, सन, तेल और पेय। ये सभी बाल से संबंधित हैं, जो प्रकृति के देवता हैं। जो भरपूर फसल और प्रजनन देता है, वह भूमि से संबंधित है।

परमेश्वर कहता है कि वह अपने लोगों को ताड़ना देगा और उन्हें वापस लाएगा। काँटों का रास्ता बनाओ ताकि यह भटका हुआ व्यक्ति वापस आ जाए। पद 8 में, हमारे पास बाइबल की कृषि तिकड़ी है।

और जब आप बालवाद की बात करते हैं, तो ये तीन सबसे महत्वपूर्ण कृषि प्रधान चीजें बालवाद के केंद्र में हैं। यही कारण है कि बालवाद इतना आकर्षक था। अनाज, शराब, तेल, ये तीनों।

अर्थव्यवस्था का उन अनाज के खेतों, गेहूं और रोटी बनाने से बहुत ज़्यादा लेना-देना था। शराब, यानी अंगूर के बाग, और जैतून के पेड़, यानी तेल। और इन तीनों को अक्सर ज़मीन के मुख्य खाद्य पदार्थों को व्यक्त करने के लिए जोड़ा या एक साथ जोड़ा जाता है।

ये तीन चीजें हैं, जिनके बारे में माना जाता था कि कनानी व्यवस्था में बाल ने ये चीजें प्रदान की हैं। लेकिन पाठ कहता है कि वह नहीं जानती थी कि यह मैं ही था जिसने उसे ये चीजें दी थीं, प्रकृति के देवता ने नहीं। मैं सृष्टि का देवता हूँ, और मैंने तुम्हें ये चीजें प्रतिदिन जीवित रखने के लिए दी हैं।

भाषा आगे कहती है कि परमेश्वर इस्राएल के पर्वों को समाप्त कर देगा, और बाल देवताओं के कारण उसकी दाखलताएँ और अंजीर के पेड़ नष्ट कर दिए जाएँगे। और फिर आप अध्याय 2 के अंत में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हैं, जहाँ परमेश्वर विश्वासघाती इस्राएल को पुनःस्थापित करने जा रहा है। और यह, निश्चित रूप से, गोमेर का मामला है।

यह मेल-मिलाप पति की पहल से शुरू होता है। दिलचस्प बात यह है कि जिस तरह सिनाई में बड़े विवाह में भगवान के साथ शुरुआत हुई थी, उसी तरह पाठ में कहा गया है कि भगवान नीचे आए और मूसा पहाड़ पर चढ़ गए ताकि वे इस्राएल का प्रतिनिधित्व कर सकें। फिर से, जैसा कि हमने कहा है, यही कारण है कि दूल्हा पहले गलियारे से नीचे आता है और दुल्हन का इंतजार करता है।

वाचा में ईश्वरीय दीक्षा का यह विचार, इस्राएल के भविष्य में मेरा विश्वास करने के कारणों में से एक है क्योंकि परमेश्वर आरंभ करता है और इस्राएल पूरा करता है। लेकिन वाचा को पूरी तरह तोड़ने के लिए दो लोगों की आवश्यकता होती है। और यहोवा वाचा नहीं तोड़ेगा, भले ही उसके लोग भटके हुए और अपूर्ण हों और परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए उसकी अपनी वफ़ादारी के लिए वाचा का पालन न करें।

अब, यदि आप यह जानना चाहते हैं कि यहूदी समुदाय में विवाह समारोह कैसे संचालित होते हैं, तो यह बाइबल का सबसे महत्वपूर्ण पाठ है। यह एक वाचा है, एक वाचा के रूप में विवाह। और पुनर्स्थापना और मैं बस जल्दी से इन शब्दों का उल्लेख करना चाहता हूँ।

वह यहाँ एक स्थायी रिश्ते के बारे में बात करता है। वह कहता है, उस दिन मैं एक वाचा बाँधूँगा, और यह वाचा एक स्थायी, हमेशा के लिए सगाई होगी। और इसलिए प्राचीन काल से हिब्रू विवाह सूत्रों में, यह मार्ग उद्धृत किया गया है, यहाँ तक कि आधुनिक यहूदी समुदाय में भी, यह मार्ग उद्धृत किया गया है।

और ध्यान दें, यहाँ पाँच शब्द हैं जो इस पर आधारित हैं। सबसे पहले, ज़ेडेक, या धार्मिकता। वह कहता है कि मैं तुम्हें हमेशा के लिए धार्मिकता में अपने साथ ब्याह लूँगा, जिसका अर्थ है सही कार्य, सही काम करना, ज़ेडेक।

दूसरे, वह कहता है, मैं न्याय के साथ तुम्हारा विवाह करूँगा, जो फिर से, एक विवाह को सफल बनाने के लिए, एक साझेदारी होनी चाहिए, समानता होनी चाहिए, एक निष्पक्ष और समान साझाकरण होना चाहिए, जिसका अर्थ है मिशपत। हेशेल के पास एक अद्भुत अध्याय है जिसे

आप मिशपत पर इस पाठ्यक्रम में पढ़ रहे हैं। तीसरा, वह हेसेड शब्द का उपयोग करता है, जिसके बारे में मैं बाद में और बात करूँगा, लेकिन यह वाचा का प्यार, दृढ़ प्यार, वफादार प्यार है।

यह प्यार में एक तरह की स्थायी, दृढ़ निष्ठा है। यही वह चीज है जो शादी को सफल बनाती है। पॉल बोरगमैन और ग्लेनी चाहे जो भी कहें, यह प्रतिबद्धता वाला प्यार है।

हेसेड हमेशा इसके साथ होता है, मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा। यह भावना नहीं है, यह वफादारी है, दृढ़ है, वहाँ टिके रहो, दृढ़ निष्ठा। रहमिम चौथा है, करुणा।

हमने अध्याय एक में इस शब्द को देखा, देखभाल और चिंता से प्रेरित होना। और इसलिए वह एक बार फिर इस करुणा को रखने जा रहा है। और फिर अंतिम है, एमुनाह शब्द का उपयोग करता है, मैं तुम्हें एमुनाह में, वफादारी में ब्याह दूँगा।

यह, बेशक, प्रोटेस्टेंट सुधार का युद्धघोष बन गया। हम हबक्कूक के बारे में बात करते समय इसके बारे में बात करेंगे। धर्मी लोग एमुनाह के द्वारा जीवित रहेंगे।

पौलुस ने हबक्कूक की तुलना में इस बारे में अलग दृष्टिकोण या व्याख्या की। लेकिन इसका मतलब है एक वफादार, विश्वसनीय, दृढ़ प्रतिबद्धता रखना। ठीक है, ये शब्द हैं, ज़ेडेक, मिशपत, हेसेद, रहमीम और एमुनाह।

ये सभी शब्द ऐतिहासिक विवाह सूत्र का हिस्सा हैं। इसलिए, इस बहाली का मतलब है कि अगर परमेश्वर के लोगों को बहाल किया जाना है, तो ये वे विशेषताएँ हैं जिनकी वह अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि उनका विवाह शानदार हो। यह हमारे लिए क्षैतिज स्तर पर काम करता है।

हम एक बेहतरीन शादी चाहते हैं। ये ऐसी चीजें हैं जो शादी का हिस्सा होनी चाहिए। यह परमेश्वर के लोगों के साथ उसके संबंध के बारे में सच है।

और मानवीय विवाह इस बात का प्रतिबिंब है कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए क्या करता है। ठीक है, मैं शुक्रवार को हमारी अगली कक्षा में इसे फिर से शुरू करूँगा।

यह डॉ. मार्व विल्सन हैं जो भविष्यवक्ताओं पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 15, होशे, भाग 2 है।